एग्री मैगज़ीन
(कृषि लेखों के लिए अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 04 (अप्रैल, 2026)
www.agrimagazine.in पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री मैगज़ीन, आई. एस. एस. एन.: 3048-8656

दलहनी फसलों में पीला चितकबरा विषाणु रोग एवं उसका प्रबंधन

डॉ. मेघा शर्मा[1] एवं *जूही सिंह[2]
[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, कृषि संकाय, जगन्नाथ यूनिवर्सिटी, चाकसू, जयपुर, राजस्थान, भारत
[2]छात्रा, बी.एस.सी. (ऑनर्स) कृषि, जगन्नाथ यूनिवर्सिटी, चाकसू, जयपुर, राजस्थान, भारत
*संवादी लेखक का ईमेल पता: lejuhisingh@gmail.com

दलहनी फसलें जैसे मूंग, उड़द, अरहर आदि में पीला चितकबरा रोग एक गंभीर समस्या है। यह रोग फसल की उपज को बहुत अधिक घटा देता है।

रोग का कारण

यह रोग एक प्रकार के विषाणु से होता है। यह विषाणु मुख्य रूप से सफेद मक्खी नामक कीट द्वारा फैलता है।

प्रमुख लक्षण

पत्तियों पर पीले और हरे रंग के धब्बे दिखाई देते हैं
पत्तियाँ पूरी तरह पीली हो जाती हैं
पौधों की वृद्धि रुक जाती है
फूल और फल कम बनते हैं
पौधे कमजोर होकर सूख सकते हैं

रोग का फैलाव

संक्रमित पौधों से स्वस्थ पौधों में
खेत में उगने वाले खरपतवार के माध्यम से
सफेद मक्खी द्वारा एक पौधे से दूसरे पौधे में

प्रबंधन

(क) सांस्कृतिक उपाय
रोगग्रस्त पौधों को उखाड़कर नष्ट करें
खेत को खरपतवार से साफ रखें
समय पर बुवाई करें
गहरी जुताई करें
(ख) प्रतिरोधी किस्में
रोग सहनशील या प्रतिरोधी किस्मों का चयन करें
(ग) रासायनिक नियंत्रण
सफेद मक्खी को नियंत्रित करना आवश्यक है
मिथाइल डेमेटॉन दवा का छिड़काव करें
(घ) समेकित उपाय
बीज उपचार करें
संतुलित खाद का प्रयोग करें
फसल चक्र अपनाएँ

निष्कर्ष

पीला चितकबरा रोग का सीधा उपचार संभव नहीं है, इसलिए इसके नियंत्रण के लिए रोकथाम और सफेद मक्खी का नियंत्रण सबसे महत्वपूर्ण है। सही समय पर उचित उपाय अपनाकर फसल को सुरक्षित रखा जा सकता है।